डा. अर्जुन चव्हाण

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

शिवाजी विश्वविद्यालय,

कोल्हापुर - 416 004

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस शोध - प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए ।

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : 26 JUN 2000

(डा. अर्जुन चव्हाण)

अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४

डा. के. पी. शहा
रीडर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
कोल्हापुर ।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. संजय यल्लाप्पा चोपडे ने शिवाजी विश्वद्यालय की एम्. फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए लघु शोध -प्रबंध ''विष्णु प्रभाकर के एकांकियों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन'' मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार संपन्न हुआ है । यह परीक्षार्थी की मौलिक कृति है । श्री. संजय यल्लाप्पा चोपडे के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

शोध-निर्देशक

(डा. के. पी. शहा)

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथि : 26 JUN 2000

प्रख्यापन

यह लघु शोध - प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल्. के लघु शोध - प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गयी है ।

शोध-छात्र

स्थान : कोल्हापुर ।

तिथी : 26 JUN 2009

(श्री. संजय यल्लाप्पा चोपडे)

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य में श्री. विष्णु प्रभाकर का स्थान बहुत ऊँचा है। वे बहुमुखी प्रतिभा लेकर हिंदी साहित्य में अवतरित हुए है। एक साथ नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, जीवन, रेखाचित्र तथा बाल साहित्य को आपने आत्मसात किया। साहित्य ही आपका जीवन बना और इसी आधार पर आप अपनी उपजीविका चला रहे हैं। विष्णु प्रभाकर की अथक तथा निरंतर चलनेवाली साहित्य सेवा से हिंदी साहित्य हमेशा ऋणी रहेगा।

यह दु:ख की बात है कि विष्णु प्रभाकर जैसे जेष्ठ और बहुमुखी प्रतिभावाले साहित्यकार की ओर हिंदी के आलोचकों ने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। उनके संबंध में जितनी भी सामग्री अब तक प्रकाशित हुई है। उनमें से कुछ तो छोटे - छोटे लेखों के रूप में मिलती है, या कुछ साहित्य के इतिहास के संदर्भ में लिखी गई है। स्वतंत्र रूप से इनकी विविध साहित्य विधाओं का सूक्ष्म अध्ययन या उनकी जीवनी और साहित्य को लेकर अनुसंधान नहीं हुआ है। विष्णु प्रभाकर जैसे प्रतिभावान साहित्यिक के प्रति यह अन्याय है। अत: ऐसे मूर्घन्य कलाकार की ओर मेरा आकृष्ट होना स्वाभाविक था। मेरा विश्वास है कि मेरे इस लघुप्रयास द्वारा हिंदी अनुशीलन के क्षेत्र में अभाव की कृति होगी। इस लघुशोध - प्रबंध का विषय सिर्फ व्यक्तित्व और कृतित्व के मूल्यांकन तक ही सीमित न रखकर उसे और भी सूक्ष्म तथा गहन बनाने की दृष्टि से उनकी एकांकियों की ओर ध्यान दिया गया है। विविध समस्या के परिप्रेक्ष्य में विष्णु प्रभाकर के एकांकी साहित्य को परखने की चेष्टा की गई है।

प्रभाकरजी ने नाटक से अधिक एकांकी लिखें हैं। वे सन 1947 के पूर्व से रेडियो रूपक लिखने वाले श्रेष्ठ एकांकीकारों में से एक हैं। उनके एकांकियों में अनेक प्रश्नों की चर्चा मिलती है इस लिए प्रभाकरजी के एकांकियों का अध्ययन करने का प्रयास मैंने किया है।

"विष्णु प्रभाकर जी के एकांकियों मे 'चित्रित समस्या का अनुशीलन" इस विषय पर शोध-कार्य करने से पहले मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित हुए थे-

1. विष्णु प्रभाकरजी ने अपने एकांकियों में कौन - कौनसी समस्याओं का चित्रण किया हैं ?

2. उन्होंने अपने एकांकियों में किस समस्या को सर्वाधिक महत्त्व दिया है और क्यों ?

3. प्राचीन समस्या और वर्तमान समस्या में क्या अंतर है ?

4. कौन - कौन सी समस्या दूवारा समाज को भविष्य में अधिक खतरा है ?

5. व्यक्ति, संस्था और शासन दूवारा प्रयास करने पर समस्या का निराकरण हो सकता है या नहीं ?

6. प्रमुख समस्याओं पर सरकार दूवारा कौनसे उपाय करना जरूरी है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर जानने तथा विषय - विवेचन में सुसंगतता लाने हेतु मैंने अपने विषय का पाँच अध्यायों में विभाजित किया है -

"प्रभाकर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व" - प्रथम अध्याय के अंतर्गत प्रभाकरजी का जन्म, बचपन, शिक्षा, नौकरी और विवाह के बारे में चित्रण है। 'प्रभाकर' नाम का इतिहास,उनकी साहित्यिक प्रेरणा एवं साहित्य पर प्रभाव, इसकी चर्चा है। उनकी ग्रंथ संपदा - कहानी, उपन्यास, जीवनी, वैचारिक साहित्य, बाल साहित्य एवं उनके एकांकियों का विशेष अध्ययन और विशेषताओं के बारे में चर्चा है।

"समस्या का स्वरूप, व्याप्ति और समस्या का अर्थ" - दूवितीय अध्याय के अंतर्गत 'समस्या' के विभिन्न अर्थ, परिभाषाएँ, समस्या साहित्य की विशेषताएँ एवं उद्देश्य, समस्याओं के प्रकार, प्रभाकरजी के एकांकियों में चित्रित समस्याओं की चर्चा करके अंत में निष्कर्ष दिये है।

"विष्णु प्रभाकर जी के एकांकियों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ" - तृतीय अध्याय के अंतर्गत उच्च - नीच जाति की समस्या, काम की समस्या, प्रेम की समस्या, परिवार नियोजन की समस्या, अनाथों की

समस्या, अवैध सन्तान की समस्या, फैशन की समस्या, स्वछंदी जीवन की समस्या, कुमारी माता की समस्याओं पर चर्चा और उपायों की चर्चा और अंत में निष्कर्ष दिये है।

"विष्णु प्रभाकर जी के एकांकियों में चित्रित राजनीतिक समस्याएँ". चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत आक्रमण की समस्या, देश विभाजन की समस्या, न्याय व्यवस्था की समस्या, रिश्वत की समस्या, सत्ता का दूरूपयोग, सिफारिश की समस्या, छलकर संपत्ति हडप करने की समस्या, दल बदलू नेता, शरणार्थियों के पूनर्वसन की समस्या, लोकतंत्र की समस्या, लोकनेता द्वारा शोषण की समस्या, आदि की चर्चा कर के उपायों की चर्चा कर अंत में निष्कर्ष दिये हैं।

" विष्णु प्रभाकर जी के एकांकियों में चित्रित आर्थिक और धार्मिक समस्याएँ". - पंचम अध्याय के अंतर्गत गरीबी की समस्या, बेकारी की समस्या, ऋण की समस्या, धार्मिक युद्ध की समस्या, धार्मिक कठोरता की समस्या, अंधविश्वास की समस्याओं की चर्चा और उपायों पर चर्चा कर के निष्कर्ष दिये है।

उपसंहार -

उपसंहार के अंतर्गत पाच अध्यायों का सार संक्षेप में देने के साथ नई उपलब्धि के रूप में मेरे सामने उपस्थित हुए ऊपर निर्दिष्ट प्रश्नों के उत्तर दिये हैं। साथ ही उन सुझावों को दिया है, जिनके द्वारा समस्या का निर्मूलन करना संभव ही सकता है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. विष्णु प्रभाकर की एकांकियों में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक समस्याओं का चित्रण मिलता है।
2. प्रभाकरजी ने सामाजिक समस्या को अधिक महत्त्व दिया है।
3. वर्तमान काल में परिवार नियोजन समस्या, जाति की समस्या, धार्मिक कठोरता की समस्या और धार्मिक संघर्ष की समस्या की स्थिति प्राचीन काल की अपेक्षा अधिक गंभीर है।
4. आदर्श लोकतंत्र निर्माण के लिए सरकार और लोक नेताओं का सहयोग अपेक्षित है।
5. धर्म को देखने की दृष्टि वैज्ञानिक होगी, तब अंधश्रद्धा, धर्मांधता कम हो सकती है। साथ ही धर्म पर अनुसंधान होना आवश्यक है।

* ऋणनिर्देश *

प्रस्तुत शोधकार्य के संकल्प की पूर्ति श्रद्धेय गुरूवर डा.के.पी.शहा. अध्यक्ष हिंदी विभाग के. एम.सी महाविद्यालय कोल्हापुर के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है।

हिंदी विभाग के अध्यक्ष डा. अर्जुन चव्हाण, आदरणीय गुरूवर्य डा.पी.एस पाटीलजी, डा. वसंत मोरेजी, प्राचार्य विश्वास सायनाकरजी कर्मवीर भाऊराव पाटील महाविद्यालय, इस्लामपुर तथा डा.जे. बी.देसाई अध्यक्ष हिंदी विभाग कस्तुरबाई वालचंद महाविद्यालय, सांगली इन सभी का मैं ऋणी हूँ । जिन्होंने समय समय पर मार्गदर्शन कर इस कार्य को पूरा करने में मेरी मदद की है।

मेरे जीवन का कोई भी कार्य माता-पिता के बिना संपन्न नहीं हुआ है। इन्हीं के आशीर्वाद का फल है कि मैं अपने कार्य की पूर्ति में सफल हुआ हूँ। आज मैं जो कुछ भी हूँ, उन्ही की बदौलत हूँ । अंतः इनका आभार मानकर मैं इनके ऋण से मुक्त नहीं होना चाहता क्योंकि ऋण तो गैरों का चूकाया जाता है, अपनों का नहीं।

मैं भाग्यशाली हूँ कि मेरे बडे भाई परशराम चोपडे - प्राचार्य नेहरू विद्या मंदीर व ज्युनिअर कॉलेज कोतोली, जिन्होंने हर समय अपनी कठिनाइयों की ओर ध्यान न देकर मेरी हर कठिनाइयों का सफलतापूर्वक समाधान किया है और आर्थिक सहायता की है। मेरी पत्नी सौ. सुजाता चोपडे ने प्रस्तुत लघु-शोध कार्य पूरा करने के लिए प्रेरणा दी है । उनके बिना यह कार्य असंभव ही था। इसी प्रकार मेरा भांजा प्रविण, बेटी अनघा आदि सभी का मैं ऋणी हूँ । जिन्होंने मेरे कार्य में अंश मात्रा में ही सही मेरी मदद की है।

इस भौतिक युग में सच्चा मित्र मिलना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। परंतु मैं इस मामले में सौभाग्यशाली हूँ। मुझे अशोक बाचुळकर, गिरीष काशिद, हनुमंत शेवाळे, विजय शिंदे, मिलिंद साळवे जैसे

सच्चे मित्र मिले और जिन्होंने इस लघु-शोध प्रबंध को पूरा करने में मेरी मदद की अतः इनके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

इस लघु प्रबंध को संपन्न करने में निम्नलिखित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है -

1. शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ।
2. कर्मवीर भाऊराव पाटील, महाविद्यालय, इस्लामपुर ।
3. कस्तुरबाई वॉलचंद महाविद्यालय, सांगली।

इन ग्रंथालयों के प्रमुख एवं कर्मचारियों का मैं हृदय से आभारी हूँ। मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोध कार्य में किया है ।

इस लघु शोध-प्रबंध का टंकलेखन श्री. अनिल साळोखे जी ने उत्तम और बड़ी तत्परता से किया। इसलिए मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। अंत में उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने जाने-अनजाने में ही सही इस लघु शोध-प्रबंध कार्य में मेरी मदद की है उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर विनम्रता से विद्वानों के सामने मैं अपने लघु शोध-प्रबंध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर : शोध - छात्र

तिथि : श्री. संजय चोपडे